वेव्स द्वारा आयोजित व्याख्यान

'जीवन पर अध्यात्म का प्रभाव और महत्त्व की शिक्षा'

६-५-२०१७, स्थान - दिल्ली संस्कृत अकादमी

उक्त महत्त्वपूर्ण विषय पर व्याख्यान का आयोजन वेव्स द्वारा दिल्ली संस्कृत अकादमी के सौजन्य से उसके ही सभागार में किया गया। श्री चन्दन कुमार मिश्र ने वैदिक मंगलाचरण और डॉ. रञ्जीत बेहरा ने लौकिक मंगलाचरण से व्याख्यान का उद्घाटन किया। महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय, गोवा में शोध प्रबन्ध प्रस्तुतकर्त्ता के रूप में कार्यरत श्रीमती क्षिप्रा जुवेकर इस व्याख्यान की मुख्य वक्ता थी। सारस्वत अतिथि के रूप मे डॉ. गणेश दत्त शर्मा विराजमान रहे। प्रस्तुत व्याख्यान श्री सुभाष गोगटे, संस्थापक-अन्त:प्रज्ञा की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ। **डॉ. जीतराम भट्ट**, सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी ने अपने स्वागत वक्तव्य से सभी का संस्कृत अकादमी में स्वागत किया। वेव्स की सचिव (प्रशासनिक) **डॉ. अपर्णा धीर** ने मंच पर आसीन गण्यमान्य अतिथियों एवं मुख्य वक्त्री का परिचय दिया। विषय की गम्भीरता की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कार्यक्रम का संचालन **डॉ. रञ्जीत बेहरा**, सचिव (शैक्षणिक) वेव्स ने किया।

श्रीमती क्षिप्रा जुवेकर ने वक्तव्य प्रारम्भ करते हुए कहा कि परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय के संस्थापक हैं। वे व्यवसाय से एक सम्मोहन उपचार विशेषज्ञ थे और नास्तिक थे। १९६७ से १९८२ तक १५ वर्ष सम्मोहन उपचार विशेषज्ञ के रूप में शोधकार्य करने पर उनके ध्यान में आया कि लगभग तीस प्रतिशत रोगी सामान्य औषधोपचार से ठीक नहीं हुए; परंतु जब उनमें से कुछ लोग किसी तीर्थस्थल अथवा संतदर्शन के लिए गए अथवा उन्होंने त्रिपिंडी श्राद्ध जैसी धार्मिक विधियां कीं, तो वे ठीक हो गए। इससे डॉ. आठवलेजी की समझ में आया कि शारीरिक एवं

मनोचिकित्सा शास्त्र से भी उच्च श्रेणीका एक शास्त्र हा□और वह हा□अध्यात्मशास्त्र' । तब १९८२ में वे आस्तिक बने ।

श्रीमती क्षिप्रा जुवेकर ने कहा कि प्रत्येक प्राणीमात्र का ध्येय है 'चिरंतन एवं सर्वोच्च आनन्द की प्राप्ति करना'। फिर भी तुलसीदासजी के कथनानुसार '*कन सम दु:ख, लागै अति भारु। सुख सुमेर सम, तदपि खभारु।।*' प्राय: मानवजीवन में सुख 25 प्रतिशत एवं दु:ख 75 प्रतिशत होता है। सुख-दु:ख के कारण शारीरिक, मानसिक अथवा आध्यात्मिक होते हैं। सामान्य व्यक्ति के जीवन की 80 प्रतिशत समस्याओं का मूलभूत आध्यात्मिक होता है। आध्यात्मिक कारणों में प्रारब्ध, पूर्वज एवं अनिष्ट शक्तियों के कष्ट अन्तर्भूत हैं। आध्यात्मिक स्तर की समस्या को सुलझाने हेतु आध्यात्मिक उपचार करना आवश्यक है। समस्या के सर्वांगींण समाधान हेतु समाज की सहायता के उद्देश्य से महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय ने एक त्रिविध समाधानयोजना की खोज की है। इसमें सात्त्विक जीवनप्रणाली, आध्यात्मिक उपचार एवं दैनिक साधना का समावेश है। परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी महषि अध्यात्म विश्वविद्यालय के संस्थापक हैं, उनके द्वारा निर्मित गुरुकृपायोगानुसार साधना के आठ अङ्ग हैं- स्वभावदोष-निर्मूलन, अहं-निर्मूलन, नामजप, सत्संग, सेवा, त्याग, प्रीति एवं भावजागृति। स्वभावदोष-निर्मूलन तथा अहं-निर्मूलन तनावमुक्ति, समाधानयुक्त जीवन एवं आध्यात्मिक उन्नति की नींव हैं।

समालोचक के रूप में सर्वप्रथम **प्रो. भूदेव शर्मा**, प्रसिद्ध गणितज्ञ ने गीता में कथित अध्यात्म का उल्लेख किया एवं इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि को अध्यात्म की सीढ़ी बताया। डॉ. राधाकृष्णन् जी के पुस्तक की चर्चा करते हुए डॉ. शर्मा ने कहा कि बाहर से कुछ ग्रहण नहीं करना, सब कुछ हमारे भीतर ही विद्यमान है। क्षिप्रा नदी से तुलना करते हुए मुख्य वक्त्री श्रीमती क्षिप्रा के व्याख्यान को **प्रो. लल्लन प्रसाद** ने मोक्षदायी कहा। पश्चिम की सोच है कि प्रकृति की प्रत्येक वस्तु हमारे उपभोग के लिए है। दीप इसी उद्देश्य से प्रज्वल्लित किया जाता है कि वह अपने प्रकाश की ऊर्जा से प्रकृति को प्रदूषण की समस्या से बचा सके। इस प्रकार हमे अपने जीवन को त्यागमय भाव से जीना चाहिए '*तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा*' (ईश. उप. 1) प्रस्तुत व्याख्यान की सराहना करते हुए **डॉ. शशि तिवारी** ने माना कि प्रारम्भिक शिक्षा तथा संस्कारों में सात्त्विक गुणों का समावेश करना ही शिक्षा का लक्ष्य है। वर्तमान युग में अध्यात्म के महत्त्व एवं प्रभाव की शिक्षा दी जानी चाहिए। केनोपनिषद् के मन्त्र को उद्धृत कर उन्होंने 'अध्यात्म' शब्द की व्याख्या की - 'अन्दर ही अन्दर जो मन जाता कही जाता सा है, वही अध्यात्म है'। जीवन में अध्यात्म के साथ सांसारिक विषयों का समन्वय वैदिक आदेश है।

डॉ. गणेश दत्त शर्मा ने सब ओर सब में व्याप्त आत्मा की चर्चा की। आत्मतत्त्व को सदैव जानने का प्रयास करते हुए हम परमात्मा से मिले- उन्होंने स्पष्ट किया। **डॉ. सरोज चावला** ने

वेव्स के इस कार्यक्रम को ज्ञानपूर्ण एवं सारगर्भित बताया। ऐसा विद्वतमण्डल ज्ञान तथा आनन्द-प्राप्ति का साधन है। इसी से सुख और आनन्द का भेद स्पष्ट होता है। यही अध्यात्म है। अध्यात्म एकांकी नहीं होना चाहिए। 'अपने आपको पहचानों' यही अध्यात्म है- **डॉ. प्रवेश सक्सेना** कहा। वर्तमान युग की मल्टीनैशनल कम्पनियों में 'Spiritual Quotient' की बात आज की जाती है।

अध्यात्म को जीवन की उन्मुखता को रोकने वाला और भय उत्पन्न करने वाला कहकर **डॉ. पंकज मिश्रा** ने अध्यात्म की प्रासंगिकता पर बल दिया। **श्रीमती संदीप कौर** ने स्वयं को जानने को अध्यात्म के रूप में वर्णित किया। **डॉ. मदनमोहन बजाज** ने समस्त संसार को सृजनकर्ता के परतन्त्र मानते हुए विज्ञान और अध्यात्म को एक बताया।

डॉ. धर्मपाल आर्य ने कहा कि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है। सबको एक समान मानना ही अध्यात्म है। 'मनुर्भव' ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। **डॉ. देवेन्द्र शर्मा** ने चेतना पर सतत् अनुसन्धान के लिए प्रेरित करते हुए अध्यात्म और चेतना को एक बताया।

अध्यात्म, आत्मा और परमात्मा के भेद को बताते हुए **श्री सुभाष गोगटे** ने अध्यक्षीय भाषण प्रारम्भ किया। जो आत्मा को बताता है वही अध्यात्म है। अपने होने का एहसास जिसको होता है वह आत्मा कहलाता है '*स्वभावोऽध्यात्म*' और जिसे अपने होने का एहसास न हो वही परमात्मा है। आत्मा एवं परमात्मा के भेद के विषय में माण्डुक्योपनिषद् और पतंजलि योग-सूत्र में वर्णन है। जो सोचते हैं, वे 'अन्तःप्रज्ञ' हैं। हम सब परमात्मा का अंश हैं। परमात्मा के साथ सम्बन्ध बताने के लिए ध्यात्म-शास्त्र की रचना हुई। समस्त संसार तीन प्रकार की सत्ता से बना है -व्यावहारिक सत्ता (जो कुछ दिखाई देता है), प्रातिभासित सत्ता (मन की कल्पना के बन्धन रूप) और आध्यात्मिक सत्ता (आत्मतत्त्व)।

सभा में उच्चस्तर के विद्वान् श्रोता के रूप में उपस्थित थे, यथा - प्रो पुष्पेन्द्र कुमार, श्री विद्या सागर वर्मा, डॉ. कान्ता भाटिया, श्री ईश नारंग डॉ. कौशल पवार, श्री वाई के वाधवा, डॉ. रेणु पन्त, डॉ. आर. एस. कौशल, डॉ. धर्मा, डॉ. शकुन्तला पुंजानी, इत्यादि। युवा विद्वान् तथा वेव्स की तरूण-तरंग शाखा से डॉ. विजय द्विवेदी, डॉ. सुप्रिया संजू, डॉ. सोमवीर शास्त्री, डॉ. देवेन्द्र नाथ ओझा, डॉ. हर्षा कुमारी, डॉ. शिल्पी सक्सेना, श्री प्रेम देवली, सुश्री सुरूचि, श्री विकास शर्मा, सुश्री प्रीति वर्मा, सुश्री स्वाति पॉल एवं श्री दर्पण मजुमदार उपस्थित हुए।

इस अवसर पर वेव्स के मुम्बई शाखा के सदस्य **डॉ. पी. वी. एन. मूर्ति** ने जुलाई मास में आयोजित होने वाले वैदिक सम्मेलन के विषय में सभा को अवगत कराया। वेव्स की अध्यक्षा डॉ. शशि तिवारी ने सभा में उपस्थित सभी सभापदों एवं श्रोताओं के प्रति धन्यवाद ज्ञापित करते हुए वैदिक चिन्तन की व्यवहारिक उपयोगिता को वेव्स का उद्देश्य बताया। व्याख्यान का समापन **डॉ. करूणा आर्या** द्वारा प्रस्तुत शान्तिपाठ से हुआ।

- *Report by Dr. Aparna Dhir, Secy.(Admin),WAVES*